ASTRO ARPITA NATH

ग्रहों के अंशों की व्याख्या

Arpita Nath द्वारा · प्रारंभिक ज्योतिष नोट्स · 2026-07-28

वैदिक ज्योतिष (Jyotish) में, केवल यह जानना कि कोई ग्रह किस राशि (Rashi) में स्थित है, आधी ही बात है। कोई ग्रह अपना फल देने की कितनी क्षमता रखता है, यह समझने के लिए आपको उसकी सटीक डिग्री देखनी चाहिए।

प्रत्येक राशि ठीक 30 डिग्री (0° से 30°) में फैली होती है। यह विशिष्ट डिग्री आपकी जन्म कुंडली (Kundli) में ग्रह की सटीक आयु, परिपक्वता और भौतिक क्षमता को दर्शाती है।

ग्रहों की डिग्री का क्या अर्थ है?

एक राशि को 30 वर्ष के जीवन चक्र या एक ऐसे कक्ष के रूप में समझें जिससे होकर ग्रह गुजरता है:

• **0 से 6 डिग्री (शिशु / बाल)**: ग्रह ने अभी-अभी राशि में प्रवेश किया है। एक शिशु की तरह, इसमें ऊर्जा तो अधिक होती है लेकिन अनुभव और दिशा की कमी होती है।

• **6 से 12 डिग्री (युवा / कुमार)**: ग्रह बढ़ रहा है और सक्रिय है, जो प्रयास के माध्यम से मध्यम से अच्छे परिणाम देने में सक्षम है।

• **12 से 18 डिग्री (प्रौढ़ / युवा)**: चरम परिपक्वता और भौतिक क्षमता! ग्रह 100% क्षमता पर कार्य करता है और अपनी पूर्ण सामर्थ्य प्रदान करता है।

• **18 से 24 डिग्री (वृद्ध)**: ग्रह अनुभवी है लेकिन उम्रदराज़ हो रहा है, जिससे परिपक्व, सूक्ष्म या विलंबित परिणाम मिलते हैं।

• **24 से 30 डिग्री (मृत/अति वृद्ध)**: ग्रह राशि के निकास द्वार पर है। एक वृद्ध व्यक्ति की तरह, इसके पास ज्ञान तो है लेकिन ठोस सांसारिक परिणाम देने के लिए भौतिक ऊर्जा का अभाव है।

डिग्री वर्गीकरण एवं प्रभाव

1. सीमांत डिग्री (0 से 1 और 29 से 30 डिग्री) - संधि काल

• **मूल अर्थ**: संक्रमणकालीन अवस्था (संधि या जल और अग्नि राशि के बीच होने पर गंडांत)।

• **प्रमुख प्रभाव**: ग्रह अस्थिर या असंतुलित महसूस करता है। यह अपने भौतिक परिणामों को स्थापित करने के लिए संघर्ष करता है क्योंकि यह दो पूरी तरह से भिन्न ग्रहीय ऊर्जाओं की दहलीज पर फंसा होता है।

2. आरंभिक डिग्री (1 से 6 डिग्री) - बाल अवस्था (शिशु)

• **मूल अर्थ**: उच्च क्षमता, कम अनुभव।

• **प्रमुख प्रभाव**: ग्रह अपने भौतिक परिणामों का लगभग 25% ही दे पाता है। यह उत्साह और नई शुरुआत तो देता है, लेकिन

दीर्घकालिक लाभ प्रकट करने के लिए इसे अन्य ग्रहों के अतिरिक्त सहयोग की आवश्यकता होती है।

3. मध्य डिग्री (6 से 24 डिग्री) - कुमार एवं युवा अवस्था (युवा और प्रौढ़)

• **मूल अर्थ**: चरम कार्य क्षमता (12 से 18 डिग्री सबसे उत्तम स्थिति है)।
• **प्रमुख प्रभाव**: ग्रह अपनी क्षमता का 75% से 100% तक फल देता है। इसकी ग्रहीय दशा (Dasha) के दौरान परिणाम दैनिक जीवन में स्पष्ट और शक्तिशाली रूप से प्रकट होते हैं।

4. अंतिम डिग्री (24 से 29 डिग्री) - वृद्ध एवं मृत अवस्था (वृद्ध / निष्क्रिय)

• **मूल अर्थ**: कम भौतिक सहनशक्ति, उच्च कर्मिक/मानसिक भार।
• **प्रमुख प्रभाव**: ग्रह 0% से 15% भौतिक क्षमता प्रदान करता है। यद्यपि यह अभी भी बौद्धिक या आध्यात्मिक अंतर्दृष्टि दे सकता है, लेकिन यह अपने दम पर ठोस सांसारिक परिणाम (जैसे भौतिक धन या शारीरिक सुख) देने के लिए संघर्ष करता है।

विशेष नियमों के लिए डिग्रियों का महत्व

1. जैमिनी कारक: जैमिनी ज्योतिष में, आपकी कुंडली में उच्चतम डिग्री वाला ग्रह (राहु/केतु को छोड़कर) आपका आत्मकारक बनता है - वह ग्रह जो आपकी आत्मा के प्राथमिक उद्देश्य का प्रतिनिधित्व करता है!

2. अस्त एवं ग्रह युद्ध: डिग्रियां यह निर्धारित करती हैं कि क्या कोई ग्रह सूर्य के अत्यधिक निकट है (अस्त) या 1 डिग्री के भीतर किसी अन्य ग्रह के साथ आमने-सामने के सीधे संघर्ष (ग्रह युद्ध) में उलझा हुआ है।

3. वर्ग कुंडलियां (वर्ग): सटीक डिग्री यह निर्धारित करती है कि कोई ग्रह नवमांश (D9) जैसे उप-चार्टों में कहाँ स्थित है, जो आपकी कुंडली की वास्तविक छिपी हुई शक्ति को प्रकट करता है।

निष्कर्ष

किसी ग्रह का उच्च राशि में होना कागज़ पर बहुत अच्छा लग सकता है, लेकिन यदि वह 0°05' या 29°55' पर स्थित है, तो उसके भौतिक हाथ बंधे हुए हैं! सटीक डिग्रियों की जांच यह सुनिश्चित करती है कि आप कुंडली (Kundli) में प्रत्येक ग्रह की वास्तविक, ठोस शक्ति को समझ सकें।

---

https://astroarpitanath.com/hindi/planetary-degrees/
ज्योतिष केवल मार्गदर्शन के लिए प्रदान किया जाता है। जीवन के महत्वपूर्ण निर्णयों के लिए, कृपया किसी योग्य पेशेवर से परामर्श लें।